सत्यमेव जयते

पंच गौरव

हनुमानगढ़

जिला प्रशासन, हनुमानगढ़

आपणो अग्रणी राजस्थान

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच – गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच – गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(भजनलाल शर्मा)

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

मंत्री
खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग व
उपभोक्ता मामले विभाग
एवं जिला प्रभारी मंत्री, हनुमानगढ़

संदेश

प्रिय हनुमानगढ़ वासियों,

राज्य सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया ''पंच–गौरव'' कार्यक्रम न केवल हनुमानगढ़ जिले की विशिष्ट पहचान को सशक्त करेगा, बल्कि इसे आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से भी समृद्ध बनाएगा। इस पहल के अंतर्गत ''एक जिला–एक उत्पाद, एक जिला–एक खेल, एक जिला–एक वानस्पतिक प्रजाति, एक जिला–एक पर्यटक स्थल, और एक जिला–एक फल'' को प्रोत्साहन देकर स्थानीय संसाधनों, कारीगरों और उद्यमियों, किसानों को आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है।

हनुमानगढ़ जिले को कृषि प्रसंस्करण, हॉकी, किन्नू, गोगामेड़ी और शीशम के रूप में अपनी अनूठी पहचान मिलेगी। यह हमारे किसानों, खिलाड़ियों, कारीगरों और उद्यमियों के लिए गर्व का विषय है। प्रदेश के बजट 2025–26 में इस योजना के लिए 510 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है, जिससे इन क्षेत्रों में विकास की नई संभावनाएं खुलेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह योजना न केवल जिले की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करेगी, बल्कि हनुमानगढ़ को एक नई ऊंचाई पर पहुंचाएगी। मैं सभी नागरिकों, उद्यमियों, किसानों और खिलाड़ियों से आग्रह करता हूं कि वे इस पहल का अधिकतम लाभ उठाएं और अपने जिले को समृद्ध बनाने में योगदान दें।

जय राजस्थान।

(सुमित गोदारा)

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

शासन सचिव
युवा मामले एवं खेल विभाग
व प्रभारी सचिव, हनुमानगढ़

संदेश

प्रिय जिले वासियों,

राज्य सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया ''पंच गौरव'' कार्यक्रम जिले की विशिष्ट पहचान को सशक्त करने और स्थानीय क्षमताओं को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस कार्यक्रम के माध्यम से ''एक जिला–एक उत्पाद, एक जिला–एक खेल, एक जिला–एक फल, एक जिला–एक पर्यटक स्थल, और एक जिला–एक प्रजाति'' को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे जिले की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और स्थानीय पहचान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थान मिलेगा।

हनुमानगढ़ जिले को कृषि प्रसंस्करण, हॉकी, किन्नू, गोगामेड़ी और शीशम के रूप में विशिष्ट पहचान मिलेगी। यह न केवल जिले की परंपरागत क्षमताओं का सम्मान है, बल्कि इन क्षेत्रों में नए अवसर सृजित करने की दिशा में एक बड़ा कदम भी है। सरकार द्वारा पंच गौरव योजना के लिए जिले को प्रतिवर्ष 5 करोड़ रुपए का बजटीय प्रावधान किया गया है, जिससे इन क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास और प्रोत्साहन को बढ़ावा मिलेगा।

मुझे विश्वास है कि यह पहल हनुमानगढ़ को विकास के नए पथ पर अग्रसर करेगी। मैं जिले के नागरिकों, उद्यमियों, किसानों और खिलाड़ियों से आह्वान करता हूं कि वे इस योजना का पूरा लाभ उठाएं और हनुमानगढ़ को गौरवशाली ऊंचाइयों तक पहुंचाने में सहयोग दे।

(डॉ. नीरज के. पवन)
आई.ए.एस.

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

संभागीय आयुक्त,
बीकानेर संभाग, बीकानेर

संदेश

हनुमानगढ़ जिले की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विशेषताएं इसे एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती हैं। राज्य सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया ''पंच गौरव'' कार्यक्रम इस गौरवशाली पहचान को और अधिक सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस पहल के तहत जिले की प्रमुख विशेषताओं को चिन्हित कर ''एक जिला–एक उत्पाद, एक जिला–एक खेल, एक जिला–एक फल, एक जिला–एक पर्यटक स्थल, और एक जिला–एक प्रजाति'' को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे स्थानीय क्षमताओं और संसाधनों का समुचित विकास हो सके।

हनुमानगढ़ जिले को कृषि प्रसंस्करण, हॉकी, किन्नू, गोगामेड़ी और शीशम के रूप में एक अनूठी पहचान मिलेगी। यह न केवल जिले की परंपराओं और विशेषताओं को सम्मान देने का प्रयास है, बल्कि इससे यहां के कारीगरों, खिलाड़ियों, किसानों और उद्यमियों को आगे बढ़ने के नए अवसर भी मिलेंगे। राज्य सरकार द्वारा इस योजना के लिए 510 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है, जिससे आधारभूत ढांचे का विकास होगा और स्थानीय उत्पादों व खेलों को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में सहायता मिलेगी।

मुझे विश्वास है कि यह पहल हनुमानगढ़ जिले की प्रगति में एक मील का पत्थर साबित होगी। मैं जिले के सभी नागरिकों से आग्रह करता हूं कि वे इस योजना का पूरा लाभ उठाएं और अपने जिले को आगे बढ़ाने में अपना सक्रिय योगदान दें। पुस्तिका प्रकाशन के लिए जिला प्रशासन की पूरी टीम को शुभकामनाएं।

(डॉ. रवि कुमार सुरपुर)
आई.ए.एस.

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

जिला कलेक्टर एवं
जिला मजिस्ट्रेट, हनुमानगढ़

संदेश

हनुमानगढ़ जिला, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक महत्व और मेहनती लोगों के लिए जाना जाता है। यह भूमि भटनेर किले की शौर्य गाथाओं से लेकर कालीबंगा की प्राचीन सभ्यता तक, इतिहास के अनमोल पन्नों को संजोए हुए है। आज हम ''पंच गौरव कार्यक्रम'' के माध्यम से अपने जिले की पहचान को और सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठा रहे हैं।

राज्य सरकार द्वारा शुरू किया गया पंच गौरव कार्यकम जिले में चहुमुखी विकास के द्वार खोलेगा। जिले में प्रत्येक वर्ष 5 करोड़ रूपए के विकास कार्य किये जायेंगे। ''पंच गौरव'' के अंतर्गत हमने जिले की पांच अनमोल पहचानों को चिह्नित किया है। एक जिला एक उत्पाद के तहत कृषि प्रसंस्करण सेक्टर का चयन किया गया है, जो जिले की कृषि अर्थव्यवस्था को और अधिक समृद्धशाली बनाएगी।

एक जिला एक प्रजाति – शीशम, जो हमारे पर्यावरण और ग्रामीण जीवन का अभिन्न हिस्सा है। एक जिला एक स्थल – गोगामेड़ी, जो इतिहास और शौर्य की जीवंत गाथा के साथ उतरी भारत का प्रमुख धार्मिक स्थल है। एक जिला एक खेल – हॉकी, जो हमारी युवा शक्ति और देश की गौरवमय खेल भावना को दर्शाता है। एक जिला एक उपज – किन्नू, जो हमारे किसानों की मेहनत और अर्थव्यवस्था का आधार है।

इस पुस्तिका का प्रकाशन हमारे जिले के गौरव को संरक्षित करने, विकसित करने और इसे व्यापक स्तर पर प्रचारित करने का एक प्रयास है। मेरा आप सभी से आह्वान है कि हम सब मिलकर इन पहचानों को न केवल संजोएं, बल्कि इनके विकास और संवर्धन के लिए सक्रिय योगदान दें। यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम अपने जिले को प्रगति के पथ पर अग्रसर करें और इसे देश–दुनिया में एक नई पहचान दिलाएं।

आइए, हम सब ''पंच–गौरव'' के इस संकल्प को साकार करने में सहभागी बनें और हनुमानगढ़ को गर्व का प्रतीक बनाएं।

(काना राम)
आई.ए.एस.

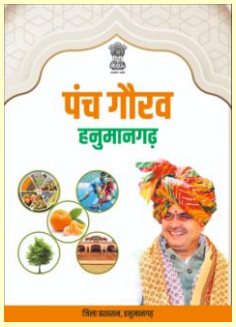

प्रधान संपादक
काना राम
जिला कलक्टर एवं
जिला मजिस्ट्रेट

संपादक
राजपाल
सहायक सूचना
एवं जनसम्पर्क
अधिकारी

संपादकीय सहयोग
आर्थिक एवं सांख्यिकी, उद्यान, उद्योग, देवस्थान, वन, खेल विभाग

प्रकाशक:
जिला प्रशासन, हनुमानगढ़

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मामले एवं जिला प्रभारी मंत्री श्री सुमित गोदारा, जिला कलक्टर एवं जन प्रतिनिधि जिला स्तर पर राज्य सरकार के एक वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में पंच गौरव स्टॉल का रिबन काटकर शुभारंभ करते हुये।

अनुक्रमणिका

अध्याय संख्या	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1	''पंच–गौरव कार्यक्रम'' – प्रस्तावना	7
2	''एक जिला–एक फल'' –किन्नौं	11
3	''एक जिला–एक उत्पाद'' – कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र	18
4	''एक जिला–एक पर्यटक स्थल'' – गोगामेड़ी	22
5	''एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति'' – शीशम	29
6	''एक जिला–एक खेल'' – हॉकी	34

(अध्याय संख्या – 1)

"पंच–गौरव कार्यक्रम" आर्थिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान की दिशा में एक कदम

राज्य में विभिन्न जिलों की भौगोलिक और आर्थिक परिस्थितियाँ भिन्न–भिन्न हैं। यह विविधता विभिन्न प्रकार के संसाधनों, जैव विविधता, पारंपरिक उत्पादों, खनिज संसाधनों और पर्यटन स्थलों के रूप में देखने को मिलती है। इन सबको ध्यान में रखते हुए, "पंच–गौरव कार्यक्रम" की शुरुआत की गई है, जिसका मुख्य उद्देश्य हर जिले की विशिष्टता को संरक्षित करते हुए, उसके आर्थिक और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देना है।

योजना के प्रमुख उद्देश्य

1. स्थानीय आर्थिक और पर्यावरणीय संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन।
2. स्थानीय उत्पादों एवं हस्तशिल्प को संरक्षित कर उन्हें बाजार में पहचान दिलाना।
3. पर्यटन स्थलों का विकास एवं स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उत्पन्न करना।
4. जिलों की पारंपरिक खेल गतिविधियों को बढ़ावा देना।
5. स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित कर उन्हें विकास प्रक्रिया में सम्मिलित करना।

योजना का कार्यान्वयन एवं सरकारी तंत्र

इस योजना का कार्यान्वयन विभिन्न सरकारी विभागों के सहयोग से किया जाएगा, जिसमें प्रमुख रूप से कृषि एवं उद्योग, वन एवं पर्यावरण, खनिज एवं खनन, पर्यटन एवं सांस्कृतिक विभाग, खेल और युवा मामलों का विभाग शामिल हैं। प्रत्येक जिले में एक विशेष टीम गठित की गई है, जो योजना के संचालन, निगरानी और निष्पादन का कार्य कर रही है।

पंच–गौरव कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन को लेकर गठित जिला स्तरीय समिति

क्रम संख्या	जिला स्तरीय समन्वय समिति	पद	नाम	मोबाईल नम्बर
1	जिला कलक्टर, हनुमानगढ़	अध्यक्ष	श्री काना राम	9950525303
2	उपवन सरंक्षक, वन विभाग, हनुमानगढ	सदस्य	श्री सुरेश कुमार आबुसरिया	8619421404
3	संयुक्त निदेशक कृषि, हनुमानगढ़	सदस्य	डॉ॰ प्रमोद कुमार	9414835354
4	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, हनुमानगढ़	सदस्य	श्री पन्ना लाल कड़ेला	9828635775
5	उप निदेशक पर्यटन विभाग, हनुमानगढ़	सदस्य		
6	उप निदेशक उद्यान विभाग, हनुमानगढ़	सदस्य	डॉ. रमेश चन्द्र बराला	6350410108

7	महाप्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र हनुमानगढ़	सदस्य	आकाशदीप संधु	9461677969
8	जिला खेल अधिकारी, हनुमानगढ़	सदस्य	श्री शमशेर सिंह	9461626297
9	संयुक्त निदेशक, सूचना प्रौ. एवं सं. विभाग, हनुमानगढ़	सदस्य	श्री योगेन्द्र कुमार	9251070001
10	सहायक आयुक्त, देवस्थान विभाग, हनुमानगढ़	सदस्य	श्री ओमप्रकाश पालीवाल	
11	जिला सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी, हनुमानगढ़	सदस्य	श्री राजपाल	8107846351
12	जिला कोषाधिकारी, हनुमानगढ़	सदस्य	श्री कृष्ण कुमार	9460648163
13	उप निदेशक, विपणन विभाग, हनुमानगढ़	सदस्य	श्री देवीलाल कालवा	8769666912
14	समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया, हनुमानगढ	सदस्य	डॉ अनूप कुमार	9414874800
15	उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, हनुमानगढ़	सदस्य सचिव	डॉ ममता बिश्नोई	9413110875

विकास के मुख्य स्तंभ

1. कृषि एवं प्राकृतिक उत्पादों का संवर्धन

- जिले में विशिष्ट कृषि उत्पादों जैसे किन्नू सहित कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र आदि को बढ़ावा दिया जाएगा।
- स्थानीय फसलों के उत्पादन को वैज्ञानिक तरीकों से सुधारकर किसानों की आय में वृद्धि की जाएगी।
- जिले के प्राकृतिक उत्पादों जैसे जड़ी–बूटियों, औषधीय पौधों आदि का संरक्षण एवं विपणन किया जाएगा।

2. औद्योगिक और हस्तशिल्प विकास

- प्रत्येक जिले में स्थानीय हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग और पारंपरिक व्यवसायों को प्रोत्साहित किया जाएगा।
- ब्रांडिंग और मार्केटिंग के माध्यम से इन उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई जाएगी।
- स्थानीय कारीगरों को प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

3. पर्यटन स्थलों का संवर्धन

- प्रसिद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों जैसे गोगामेड़ी आदि को संरक्षित और विकसित किया जाएगा।

- पर्यटकों के लिए सुविधाओं का विस्तार किया जाएगा, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।
- धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन को विकसित करने के लिए विशेष आयोजन किए जाएंगे।

4. खेलों को प्रोत्साहन

- स्थानीय पारंपरिक खेलों को बढ़ावा देने के लिए जिले स्तर पर स्टेडियम, ट्रेनिंग सेंटर और अन्य बुनियादी ढांचे का निर्माण किया जाएगा।
- उभरते हुए खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देने और उन्हें राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

वित्तीय प्रबंधन और संसाधन जुटाव

1. इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक जिले को 5 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष प्रदान किए जाएंगे।
2. विभिन्न सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों, सीएसआर फंडिंग, अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसियों, सांसद और विधायक निधि आदि से अतिरिक्त संसाधन जुटाए जाएंगे।
3. योजना की सफलता सुनिश्चित करने के लिए समय–समय पर मूल्यांकन और निगरानी की जाएगी।

पंच–गौरव योजना के लाभ

1. स्थानीय कारीगरी का संरक्षणः– योजना के तहत, प्रत्येक जिले को अपने पारंपरिक शिल्प और उत्पाद को पहचान दिलाने का अवसर मिलता है, जिससे उन उत्पादों का संरक्षण हो पाता है।
2. आर्थिक विकासः– ''एक जिला–एक उत्पाद'' से स्थानीय उत्पादों का प्रचार–प्रसार होता है, जिससे स्थानीय व्यवसायों को नई दिशा मिलती है और वहां के लोग आर्थिक रूप से सशक्त होते हैं।

3. रोजगार सृजनः– योजना से रोजगार के अवसर भी बढ़ते हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जहां हस्तशिल्प, कृषि, या विशेष कारीगरी आधारित उद्योग होते हैं।

4. स्थानीय उत्पादों का वैश्विक स्तर पर प्रचारः– योजना के तहत स्थानीय उत्पादों को देश–विदेश में पहचान मिलती है, जिससे इनकी बिक्री और निर्यात में वृद्धि होती है।

5. आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देनाः– योजना स्थानीय उद्यमियों, कारीगरों और किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे वे अपने उत्पादों को बड़े बाजारों में बेच सकें।

जिले के पंच–गौरव

1. एक जिला एक उत्पाद– कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र
2. एक जिला एक खेल – हॉकी
3. एक जिला एक किस्म – किन्नू
4. एक जिला एक गंतव्य – गोगामेड़ी
5. एक जिला एक प्रजाति – शीशम वृक्ष

पंच–गौरव कार्यक्रम न केवल स्थानीय संसाधनों के संरक्षण की दिशा में एक बड़ा कदम है, बल्कि यह आर्थिक और सामाजिक समृद्धि की नई राह भी खोलती है। इस योजना से न केवल स्थानीय उद्योगों और कृषि को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि पर्यटन, संस्कृति और खेलों के विकास से संपूर्ण राज्य में एक सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेगा। पंच–गौरव कार्यक्रम निश्चित रूप से जिले के सतत विकास में एक मील का पत्थर साबित होगा।

(अध्याय संख्या – 2)

"एक जिला–एक फल" – किन्नौं

परिचय

किन्नौं एक रसीला और स्वादिष्ट फल है, जो आकार में संतरे के फल जैसा होता है। यह फल विटामिन–सी से भरपूर होता है और स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक फायदेमंद माना जाता है। किन्नौं का सेवन सेहत को बढ़ावा देता है और यह शरीर के इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है।

उत्पत्ति और विकास

किन्नौं एक संकर फल है, जिसे दो अलग–अलग प्रकार के साइट्रस फलों– 'किंग' (साइट्रस नोबिलिस) और 'विलो लीफ' (साइट्रस एक्स डेलिसियोसा) को मिलाकर विकसित किया गया है। इस फल को सबसे पहले 1935 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के सिट्रस एक्सपेरिमेंट स्टेशन में हॉवर्ड बी. फ्रॉस्ट द्वारा विकसित किया गया था। इसके बाद, कैलिफोर्निया में किन्नौं के बागों की स्थापना की गई। भारत में किन्नौं की बागवानी की शुरुआत पंजाब राज्य से हुई। पंजाब के बाद राजस्थान, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में भी किन्नौं की खेती शुरू हुई।

राजस्थान में किन्नौं का सबसे अधिक उत्पादन श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में होता है। इन क्षेत्रों की जलवायु और मिट्टी किन्नौं की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। वर्तमान में राज्य के विभिन्न जिलों जैसे श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, दौसा इत्यादि में किन्नौं की बागवानी की जा रही है। इन क्षेत्रों में किन्नौं के बागों की बढ़ती संख्या यह दर्शाती है कि यह फल किसानों के लिए एक लाभकारी विकल्प बन चुका है।

'किंग' (साइट्रस नोबिलिस)

'विलो लीफ' (साइट्रस एक्स डेलिसियोसा)

किन्नौं

जिले में वर्तमान स्थिति

क्र.स.	घटक	विवरण
1	फल का नाम	किन्नौं
2	क्षेत्रफल	3610 है.
3	ड्रिप आधारित क्षेत्र	2970 है.
4	फलड सिंचाई आधारित क्षेत्र	640 है.
5	फलत अवस्था क्षेत्र	3260 है.
6	औसत उपज	300 क्वि./है.
7	जिले में किन्नौं का वार्षिक अनुमानित उत्पादन	108300 मै. टन

भूमि

किन्नौं की बागवानी के लिए बलुई दोमट और दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। लवणीय, क्षारीय और जलमग्न मृदाओं में किन्नौं की बागवानी संभव नहीं है। किन्नौं के पौधों के लिए ऐसी मिट्टी होनी चाहिए, जिसमें अच्छे जल निकास की सुविधा हो और जैविक कार्बन की पर्याप्त मात्रा मौजूद हो। साथ ही, मिट्टी में केल्शियम कार्बोनेट की मात्रा 4.5 प्रतिशत से कम होनी चाहिए।

पौध लगाना

किन्नौं के पौधों को 6x6, 6x4 और 6x3 वर्गमीटर की ज्यामिति पर लगाना चाहिए। पौधे लगाने से पहले मई–जून के महीनों में 1x1x1 मीटर आकार के गड्ढे खोदकर कम से कम दो महीने पहले तैयारी करनी चाहिए। इस समय में गड्ढे में पर्याप्त पानी का संचयन और मिट्टी को सही रूप से तैयार किया जाना चाहिए, ताकि पौधों की अच्छी वृद्धि हो सके।

खाद और उर्वरक

किन्नौं के अच्छे उत्पादन के लिए संतुलित मात्रा में खाद और उर्वरक का उपयोग करना अत्यंत आवश्यक है। उचित खाद और उर्वरक के चयन से पौधों की वृद्धि उत्तम होती है और फल की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। किसान को उर्वरक की सही मात्रा का इस्तेमाल करना चाहिए, ताकि पौधों को आवश्यक पोषक तत्व मिल सकें और उत्पादन में वृद्धि हो। प्रति पौधा खाद एवं उर्वरक की मात्रा निम्नानुसार है :–

खाद / उर्वरक (कि.ग्रा.) / वर्ष प्रति पौधे में	किन्नौं के पोधों की आयु वर्षों में						
	एक वर्ष	दो वर्ष	तीन वर्ष	चार वर्ष	पाँच वर्ष	छः वर्ष	सात वर्ष से अधिक
गोबर खाद	20	40	60	80	100	100	100
सुपर फास्फेट	0.250	0.500	0.750	1.000	1.250	1.500	1.500
म्यूरेट ऑफ पोटाश	--	--	0.300	0.300	0.500	0.500	0.500
नत्रजन	0.060	0.120	0.180	0.300	0.450	0.625	0.750
जिंक सल्फेट	0.035	0.070	0.100	0.150	0.250	0.250	0.250

गोबर की खाद + सुपर फास्फेट + म्यूरेट ऑफ पोटाश – जनवरी से फरवरी के प्रथम सप्ताह तक देवें तथा नत्रजन 1/3 भाग फरवरी (फूल आने से पहले) + 1/3 भाग अप्रैल में (फल या दाना लगने बाद) + 1/3 भाग अगस्त के चौथे सप्ताह से प्रथम पाँच साल तक दें।

सिंचाई

किन्नौं के अच्छे उत्पादन के लिए ड्रिप सिंचाई प्रणाली का उपयोग अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह जल की बचत करने के साथ–साथ पौधों को आवश्यकतानुसार पानी भी प्रदान करती है। जनवरी के प्रथम सप्ताह में सिंचाई बंद कर दी जानी चाहिए, और तापमान के अनुसार फरवरी के अंतिम सप्ताह या मार्च के प्रथम सप्ताह में सिंचाई को फिर से शुरू करना चाहिए।

ड्रिप सिंचाई के माध्यम से किन्नौं के बाग में, निम्नलिखित तालिका के अनुसार, एक दिन के अंतराल पर प्रति पौधा पानी की आवश्यक मात्रा (लीटर में) निर्धारित की जाती है, जो पौधों की उम्र, मौसम और मिट्टी की स्थिति पर निर्भर करती है।

आयु (वर्ष)	जन.	फर.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित.	अक्टू.	नवम्बर	दिसम्बर
प्रथम	1.5	2.4	3.6	5.8	7.2	7.5	6.9	6.6	5.4	4.0	2.4	1.5
द्वितीय	3.5	5.4	8.2	13.0	16.2	17.0	15.6	14.9	12.2	9.1	5.4	3.4
तृतीय	6.2	9.5	14.5	23.0	28.8	30.2	27.7	26.5	21.7	16.1	9.5	6.1
चतुर्थ	13.9	21.5	32.7	51.8	64.8	67.8	62.3	59.6	48.7	36.2	21.5	13.7
पंचम	18.9	29.2	44.5	70.6	88.2	92.3	84.8	81.1	66.3	49.3	29.2	18.6
छठा	24.6	38.2	58.1	92.2	115.3	120.6	110.7	106.0	86.6	64.4	38.2	24.3

सातवां	29.0	44.9	68.4	108.5	135.7	142.0	130.3	124.7	102.0	75.8	44.9	28.7
आठवां तथा उसके पश्चात	32.6	50.5	76.8	121.9	152.4	159.5	146.4	140.1	114.6	85.2	50.5	32.2

किन्नौं में ड्रिप पद्धति से सिंचाई

किन्नौं के प्रमुख कीट एवं रोग

1. कीट– किन्नौं के पौधों पर विभिन्न कीटों का आक्रमण हो सकता है, जिनमें प्रमुख हैं –

- सफेद मक्खी
- थ्रिप्स
- लीफ माइनर
- सिट्रससिल्ला
- रेड स्पाइडर
- फल चूसक पतंगा
- किन्नौ की तितली

इनकी उपस्थिति से पौधों की वृद्धि रुक सकती है और फलों की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

2. रोग– किन्नौं के पौधों में विभिन्न रोग भी पाए जाते हैं, जो उत्पादकता को प्रभावित कर सकते हैं। प्रमुख रोगों में शामिल हैं–
   - सिट्रस केंकर
   - सिट्रस फाइटोप्थेरा (गमोसिस)
   - सिट्रस डाईबेक

इन रोगों से बचाव के लिए उचित जैवक रसायनिक उपचार और निवारक उपायों की आवश्यकता होती है।

किन्नौं के मुख्य पोषक घटक

किन्नौं फल में विटामिन ए, बी, सी और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। किन्नौं विटामिन सी का एक अच्छा स्रोत है, जिसमें 100 ग्राम में 69.7 एमजी विटामिन सी होता है। इसके अतिरिक्त, इसमें फाइबर, जिंक, आयरन, कैल्शियम, थायामीन, राइबोफ्लेविन, नियासिन और अन्य खनिज तत्व भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से किन्नौं का उपयोग

1. विटामिन सी का समृद्ध स्रोत

किन्नौं विटामिन सी से भरपूर होता है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है, जिससे विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाव होता है।

2. एंटीऑक्सीडेंट गुण

यह फल एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है, जो शरीर में हानिकारक मुक्त कणों को बेअसर करने में मदद करते हैं, जिससे समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा मिलता है।

3. प्रचुर मात्रा में फाइबर

किन्नौं में उच्च मात्रा में फाइबर होता है, जो पाचन में मदद करता है और आंतों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। स्वस्थ पाचन तंत्र को बनाए रखने के लिए किन्नौं का सेवन अत्यधिक लाभकारी है।

आर्थिक महत्व

किन्नौं एक संकर सिट्रस फल है, जो जिले के कृषि परिदृश्य में महत्वपूर्ण आर्थिक महत्व रखता है। जिले में व्यावसायिक रूप से किन्नौं के बगीचे स्थापित किए गए हैं, और यह परंपरागत फसलों के स्थान पर बागवानी अपनाने वाले किसानों की पहली पसंद बन चुका है। परंपरागत फसलों की तुलना में किन्नौं की बागवानी से किसानों को अधिक शुद्ध लाभ प्राप्त होता है।

विपणन

किन्नौं की अद्वितीय स्वाद और लंबी शेल्फ लाइफ के कारण स्थानीय, राज्य और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में उच्च मांग है। जिले के किसान स्थानीय बाजारों के साथ–साथ पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल इत्यादि राज्यों में किन्नौं का विक्रय करते हैं। इसके अलावा, किन्नौं की ग्रेडिंग, वैक्सिंग और पैकेजिंग कर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में विक्रय किया जाता है।

जिले में किन्नौं बागवानी की संभावनाएँ

1. फसल विविधीकरण और परंपरागत फसलों से अधिक उत्पादन और शुद्ध लाभ।
2. जिले की जलवायु और विशेष स्वाद के कारण देशभर में अलग पहचान।
3. नहरी जल की पर्याप्त उपलब्धता से अधिक उत्पादन।
4. फलों की उच्च गुणवत्ता के कारण निर्यात की प्रचुर संभावनाएँ।

5. सेल्फ लाइफ अधिक होने के कारण बाहर के बाजारों में विक्रय आसान।
6. ताजे फलों से विभिन्न परिरक्षित उत्पाद जैसे स्कवैश, नैक्टर और फ्लेवर्ड ड्रिंक आदि का निर्माण संभव।

जिले में किन्नौं बागवानी के लिए मृदा स्वास्थ्य, जलवायु और जलवायु परिस्थितियाँ उपयुक्त हैं। किन्नौं से कृषकों को परंपरागत फसलों की तुलना में अधिक शुद्ध लाभ प्राप्त होता है। यह फल न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से लाभकारी है, बल्कि स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी अत्यधिक महत्व रखता है। किन्नौं की बागवानी को बढ़ावा देने से जिले में कृषि के विकास में मदद मिल सकती है।

किन्नौं का बाग

————————

(अध्याय संख्या – 3)

''एक जिला–एक उत्पाद''– कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र''

पंच– गौरव कार्यक्रम में ''एक जिला–एक उत्पाद'' के लिए कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र का चयन किया गया है। हनुमानगढ़ जिला, राजस्थान के उत्तरी भाग में स्थित है, जो अपनी उपजाऊ भूमि और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है। जिले में प्रमुख रूप से गेहूं, सरसों, बाजरा, चावल, कपास, और फल (जैसे तरबूज, खरबूजा, आदि) की खेती होती है। इन कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण से जुड़ी संभावनाएँ जिले के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र (Agro&processing sector) न केवल कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन (value addition) में मदद करता है, बल्कि यह रोजगार सृजन, औद्योगिक विकास, और निर्यात को भी बढ़ावा देता है।

हनुमानगढ़ जिले में कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र की विशाल संभावनाएँ हैं। यहां की उपजाऊ भूमि और विविध कृषि उत्पादों के कारण यह क्षेत्र कृषि प्रसंस्करण उद्योग के लिए एक आदर्श स्थान बन सकता है। इस क्षेत्र में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा का विशेष ध्यान है, इस सेक्टर में निवेश और विकास को बढ़ावा मिलेगा, यह न केवल स्थानीय किसानों और कारीगरों के लिए आय के नए स्रोत खोलेगा, बल्कि जिले की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बनाएगा। साथ ही, यह रोजगार सृजन, निर्यात और औद्योगिकीकरण में भी मददगार साबित होगा।

भूमिका

''एक जिला–एक उत्पाद'' योजना एक पहल है, जो प्रत्येक जिले के प्रमुख और पारंपरिक उत्पाद की पहचान करने और उसे बढ़ावा देने के लिए बनाई गई है। इसका उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना और रोजगार सृजन के नए अवसर उत्पन्न करना है। पंच–गौरव कार्यक्रम के तहत, हनुमानगढ़ जिले को कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र के लिए चुना गया है, क्योंकि यह जिला कृषि प्रधान है और यहाँ विविध कृषि उत्पादों की खेती की जाती है। इस योजना के माध्यम से जिले के कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण को बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे जिले के कृषि और औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान होगा।

जिले की कृषि उपज और प्रसंस्करण क्षेत्र की संभावनाएँ

हनुमानगढ़ जिला राजस्थान के उत्तरी भाग में स्थित है और इसकी कृषि आधारित अर्थव्यवस्था प्रमुख है। यहाँ की उपजाऊ भूमि और जल संसाधन जिले में विविध प्रकार की कृषि फसलों के उत्पादन में सहायक हैं। हनुमानगढ़ को ''राजस्थान का अन्न का कटोरा'' भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ की नहरी सिंचाई प्रणाली से प्रचुर मात्रा में कृषि फसलों का उत्पादन होता है। जिले में प्रमुख रूप से गेहूं, सरसों, बाजरा, चावल, कपास और फल (जैसे तरबूज, खरबूजा) की खेती की जाती है।

2022–2023 के दौराऩ जिले में कृषि उत्पादन

हनुमानगढ़ जिले में वर्ष 2022–2023 में 31533 हेक्टेयर एरिया में 159336 मीट्रिक टन धान, 253180 हेक्टेयर में 376954 मीट्रिक टन सरसों एवं 220840 हेक्टेयर में 711547 कॉटन बेल्स का उत्पादन हुआ। इसके साथ ही वर्ष 2022–23 में 391058 हेक्टेयर में 197915 मीट्रिक टन ग्वार सीड्स का उत्पादन हुआ।

इन उत्पादन आंकड़ों से स्पष्ट है कि हनुमानगढ़ जिले में कृषि प्रसंस्करण के क्षेत्र में संभावनाएँ असीमित हैं। इन उत्पादों के प्रसंस्करण से न केवल स्थानीय आय में वृद्धि होगी, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न होंगे।

कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र के अंतर्गत संभावनाएँ

हनुमानगढ़ में कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र के विकास की कई संभावनाएँ हैं, जो जिले के आर्थिक विकास में मदद कर सकती हैं।

1. अनाज प्रसंस्करण– हनुमानगढ़ में गेहूं, सरसों, बाजरा जैसी फसलें प्रमुख रूप से उगाई जाती हैं। इन अनाजों का प्रसंस्करण करके कई प्रकार के उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं, जैसे–

– ''आटा, दलिया, चिउड़े, बेसन''
– ''सरसों का तेल'' और अन्य खाद्य तेल

इसके अलावा, अन्य उत्पाद जैसे ''मक्खन, घी'' और ''फलियां'' भी प्रसंस्कृत किए जा सकते हैं। इन प्रसंस्कृत उत्पादों की मांग घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में है।

2. फल और सब्ज़ी प्रसंस्करण– हनुमानगढ़ जिले में तरबूज, खरबूजा, टमाटर, हरी मिर्च जैसे ताजे फल और सब्ज़ियाँ उगाई जाती हैं। इनका प्रसंस्करण करके निम्नलिखित उत्पाद बनाए जा सकते हैं।

– ''रस'' (जैसे फल का रस)
– ''अचार, मुरब्बा'', और ''कन्फेक्शनरी उत्पाद''
– ''कैनिंग उद्योग'' विभिन्न फल और सब्ज़ियाँ पैक की जा सकती हैं।

इसके अलावा, सूखे फल और ड्राई फ्रूट्स जैसे ''अखरोट'', ''काजू'' भी एक बड़ा उद्योग बन सकते हैं।

3. डेयरी उद्योग– हनुमानगढ़ में दूध उत्पादन का भी अच्छा अवसर है। जिले में घी, पनीर, दही, छाछ, दूध पाउडर जैसे उत्पादों का प्रसंस्करण किया जा सकता है। इन उत्पादों को न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि विदेशों में भी निर्यात किया जा सकता है।

4. मसाले प्रसंस्करण– राजस्थान मसालों के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। हनुमानगढ़ जिले में ''जीरा, धनिया, लाल मिर्च, हल्दी'' आदि मसालों की खेती होती है। इन मसालों का प्रसंस्करण और पैकेजिंग करके उच्च गुणवत्ता वाले मसाले तैयार किए जा सकते हैं। यह मसाले घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अपनी मांग के कारण प्रमुख उत्पाद बन सकते हैं।

5. कपास प्रसंस्करण– हनुमानगढ़ जिले में कपास की एक बड़ी पैदावार होती है। इसका प्रसंस्करण करके सूती वस्त्र, तौलिये, चादर आदि का निर्माण किया जा सकता है। कपास की जिनिंग से रुई, खल, और खाद्य तेल का भी उत्पादन किया जा सकता है।

6. फसल अपशिष्ट का उपयोग (Waste Utilization):– कृषि के दौरान उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट, जैसे फसल के बचे हुए अवशेष, खाद, और कृषि–उपलब्ध अन्य सामग्री का प्रसंस्करण करके बायोएनर्जी (जैसे बायोगैस) और जैविक उर्वरक तैयार किए जा सकते हैं। यह न केवल पर्यावरण को लाभ पहुंचाता है, बल्कि इसे व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी फायदेमंद बनाया जा सकता है।

राज्य और केंद्र सरकार द्वारा प्रोत्साहन

राज्य और केंद्र सरकार कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाओं को लागू कर रही है।

– ''राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना 2019 और 2022'' के तहत हनुमानगढ़ जिले में कॉटन जिनिंग और सरसों तेल की इकाइयों को निवेश सहायता प्रदान की गई है।

– 16 अक्टूबर, 2024 को हनुमानगढ़ में राइजिंग राजस्थान के बैनर तले हुए ''राइजिंग हनुमानगढ़ इन्वेस्टर मीट–2024 में निवेशकों ने कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र में खासी रूचि दिखाई। मीट में कृषि क्षेत्र में 62 मेमोरंडम ऑफ़ अंडरस्टैंडिंग हुए। जिनमें से 11 निवेशकों ने धरातल पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया है वहीं 15 निवेशकों ने इकाई की स्थापना के लिए भूमि का चिह्नीकरण कर लिया है। 62 औद्योगिक इकाइयों के संचालित होने से जिले में 534 करोड़ रूपए का निवेश आएगा तथा 2000 से अधिक निवासियों को रोजगार मिलेगा।

जिले में स्थापित कृषि प्रसंस्करण इकाईयों का परिदृश्य

हनुमानगढ़ में कृषि प्रसंस्करण की 96 औद्योगिक इकाइयां सचालित है, 31 इकाइयां कॉटन जिनिंग की, 84 इकाइयां चावल, दाल, गेंहूं, तेल आधारित है। कॉटन की जिनिंग करते हुए धागा, रुई, खळ, खाद्य तेल इत्यादि का उत्पादन किया जाता है। जिले में रीको के 8 औद्योगिक क्षेत्र स्थापित है। हनुमानगढ़ का संगरिया कृषि यंत्रों एवं उच्च गुणवत्ता की विभिन्न फसलों की बिजाई मशीनों के निर्माण तथा अन्य राज्यों में निर्यात के लिए प्रसिद्ध है। संगरिया में ही 10 मेगावाट का बायोमास आधारित विद्युत् प्लांट स्थापित है। हनुमानगढ़ जिला दुग्ध उत्पादन क्षेत्र में विशेष स्थान रखता है। जिले में स्थापित सरस डेयरी प्लांट में लगभग 1 लाख लीटर दूध की आवक प्रतिदिन होती है। इसके साथ ही 6 मेट्रिक घन घी, पनीर, दही सहित अन्य उत्पाद बनते है।

हनुमानगढ़ जिले में ''एक जिला–एक उत्पाद'' योजना के अंतर्गत कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र का बहुत अधिक विकास संभावित है। इस क्षेत्र में बुनियादी ढांचे, प्रशिक्षण, और विपणन प्रणाली को सुदृढ़ किया जायेगा, जिससे यह क्षेत्र न केवल रोजगार और आय के नए अवसर उत्पन्न करेगा, बल्कि जिले की अर्थव्यवस्था को भी सशक्त बनाएगा। सरकार के प्रोत्साहन और निवेश के साथ यह क्षेत्र एक प्रमुख आर्थिक विकास का मॉडल बनेगा, जिससे न केवल हनुमानगढ़, बल्कि पूरे राजस्थान और भारत की कृषि प्रसंस्करण क्षमता को मजबूती मिलेगी।

————————

(अध्याय संख्या – 4)

"एक जिला – एक पर्यटन स्थल" – गोगामेड़ी

गोगामेड़ी एक प्रमुख धार्मिक स्थल है जो हनुमानगढ़ के नोहर उपखण्ड में स्थित है। गोगामेड़ी श्री गोगाजी मंदिर के कारण प्रसिद्ध है। गोगाजी को लोक देवता के रूप में राजस्थान, हरियाणा और पंजाब के क्षेत्रों में पूजा जाता है। गोगाजी को साँपों का देवता और पृथ्वी के रक्षक के रूप में पूजा जाता है। उनके बारे में कई लोककथाएँ और कथाएँ प्रचलित हैं, जिनमें यह बताया जाता है कि उन्होंने अपनी शक्ति से कई बीमारियों और विपत्तियों का निवारण किया। गोगामेड़ी का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है। यह स्थान गोगाजी के सम्मान में एक विशाल मेला आयोजित करता है, जो हर साल विशेष रूप से गोगाजी के व्रत या 'गोगा नवमी' के दौरान मनाया जाता है। यह मेला लाखों भक्तों को आकर्षित करता है, जो यहाँ आकर गोगाजी की पूजा–अर्चना करते हैं और अपनी मनोकामनाएँ पूरी होने की आशा करते हैं।

गोगामेड़ी केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है, बल्कि यह राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर का भी एक अहम हिस्सा है। यहाँ पर आयोजित होने वाले मेलों, पूजा विधियों, और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इन आयोजनों के माध्यम से क्षेत्रीय परंपराओं, रीति–रिवाजों और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण होता है। इसके साथ ही, यह स्थल क्षेत्रीय कला और शिल्प के लिए भी प्रसिद्ध है, जहाँ स्थानीय कारीगर अपने शिल्प कौशल को प्रस्तुत करते हैं। इसलिए गोगोमेडी स्थल को राजस्थान सरकार द्वारा प्रस्तावित पंच–गौरव कार्यक्रम में एक जिला–एक डेस्टिनेशन के रूप में चयनित किया गया है।

मंदिर श्री गोगाजी, गोगामेड़ी

श्री गोगाजी का परिचय

मान्यता है कि श्री गोगाजी एक महान चौहान राजपूत योद्धा थे। उनका जन्म चौहान वंश के शासक जेवर के यहाँ, लगभग विक्रम सम्वत 1003 ई. (संवत 1003) में भाद्रपद सुदी नवमी को चुरू जिले के ददरेवा गांव में हुआ। इनकी माता का नाम बाछल और पत्नी का नाम रानी सरियल था। वे गुरू गोरखनाथ के प्रमुख शिष्य रहे और गोगामेडी क्षेत्र में युद्ध करते हुए समाधि को प्राप्त हुए।

श्री गोगाजी को सर्पों के देवता के रूप में पूजा जाता है, और इसलिए उन्हें 'जाहरवीर' के नाम से भी जाना जाता है। यह मान्यता है कि सर्पदंश का इलाज उनके नाम के धागे से बंधे हुए मंत्रों से संभव होता है। मध्यकालीन वीर महापुरुष और लोकदेवता श्री गोगाजी महाराज ने विभिन्न संप्रदायों के बीच श्रद्धा अर्जित की और वे एक धर्मनिरपेक्ष पीर के रूप में प्रसिद्ध हुए। इस क्षेत्र में एक प्रसिद्ध लोक दोहा प्रचलित है–

''पाबू, हड़बू, रामदे, मांगलिया, मेहा।
पाँचों पीर पधारज्यों, गोगाजी जेहा।''

यह दोहा श्री गोगाजी की महिमा को प्रकट करता है और उनके प्रति समर्पण और श्रद्धा को दर्शाता है।

मंदिर परिचय

श्री गोगाजी मंदिर, राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले के मुख्यालय से लगभग 120 किलोमीटर दूर स्थित है। यह मंदिर राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग द्वारा प्रबंधित और नियंत्रित किया जाता है और यह राजकीय आत्मनिर्भर श्रेणी का मंदिर है।

मंदिर स्थापत्य

2016 से पूर्व की स्थिति

वर्तमान स्थिति

किवदंती के अनुसार, लगभग 1000 वर्ष पूर्व, दसवीं–ग्यारवी शताब्दी में जब गोगाजी ने समाधि ली, तो दिल्ली के बादशाह ने बगावत को दबाने के बाद गोगामेडी से लौटते हुए उस स्थान पर अपनी अलौकिक शक्ति से प्रभावित होकर गोगाजी की समाधि पर चूना और ईंटों से एक पक्की कोठी बनवाई। यह स्थल ऊंचे स्थान पर, एक ऊंचे टीले पर स्थित था, इसलिए इसे ''गोगामेडी'' नाम दिया गया।

श्री गोगाजी समाधि

जीर्णोद्धार और मंदिर की वास्तुकला

तत्कालीन बीकानेर के महाराजा श्री गंगा सिंह जी ने 26 जून 1911 को इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया। उन्होंने मिश्रित शैली में सफेद संगमरमर से मंदिर का निर्माण कराया। गोगाजी की समाधि पक्के सफेद संगमरमर से निर्मित है और समाधि के सामने की दीवार पर गोगाजी की घोड़े पर सवार मूर्ति उकेरी गई है। इस मूर्ति में गोगाजी घोड़े पर सवार हैं, घोड़े के आगे नरसी पाण्डे और पीछे भज्जू कोतवाल उकेरे गए हैं। इसके साथ ही सूर्य और चंद्रमा भी मूर्ति के आस–पास हैं।

मंदिर में एक और विशेषता है, उत्तर दिशा की दीवार में एक चिराग है, जिसकी वर्षभर सेवा और पूजा चायल करते है। वहीं, दक्षिण दिशा की दीवार में एक अन्य चिराग है, जिसकी पूजा एक माह तक ब्राह्मण करते हैं।

मंदिर का वास्तुकला स्वरूप

मंदिर की बाहरी संरचना में मिश्रित स्थापत्य कला की शैली का प्रभाव दिखाई देता है। यह संरचना मस्जिद जैसी प्रतीत होती है, जिसमें दीवारें नहीं थीं, और चार मीनारों से घिरा हुआ था। इस स्वरूप को 2016 से 2019 तक राजस्थान सरकार ने जीर्णोद्धार कर पुनर्निर्मित किया। इस

दौरान मंदिर को एक विस्तृत रूप दिया गया, जिसमें जोधपुर के छित्तर पत्थरों से खंभे और चार मुख्य द्वार बनाए गए, लेकिन निज मंदिर का स्वरूप वैसा ही रखा गया।

मंदिर परिसर में अन्य प्रमुख स्थल

मंदिर परिसर में कई अन्य महत्वपूर्ण स्थल भी हैं, जैसे–

– कलश
– नरसिंह पाण्डे कुण्ड
– नरसिंह पाण्डे थान
– नगाड़ा
– भज्जू कोतवाल
– रानी सरियल समाधि
– माता बाछल समाधि

इसके अलावा सब्बलसिंह थान भी मंदिर परिसर में स्थित है। इन स्थलों का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है और ये मंदिर के इतिहास और आस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

मंदिर की विशेषताएँ

श्री गोगाजी मारवाड़ के पंच पीरों में से एक प्रमुख लोक देवता हैं, और उनका यह मंदिर धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिक सदभाव का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। श्री गोगाजी का मंदिर गोगामेडी में स्थित है, जहां प्रतिवर्ष श्रावण पूर्णिमा से लेकर पूरे भाद्रपद माह तक विशाल मेला आयोजित किया जाता है। इस मेले में भारत के विभिन्न राज्यों जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड, गुजरात, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश आदि से लगभग 25 से 30 लाख श्रद्धालु श्री गोगाजी के दर्शन के लिए आते हैं। सालभर में करीब 50 लाख श्रद्धालु इस मंदिर के दर्शन करते हैं।

नीली घोड़ी पर सवार श्री गोगाजी की प्रतिमा

मेले का आयोजन

भाद्रपद मास का मेला देवस्थान विभाग द्वारा आयोजित किया जाता है। पिछले वर्ष, ''19 अगस्त 2024'' से ''18 सितंबर 2024'' तक मेले का सफल आयोजन किया गया था। इस वर्ष मेला ''9 अगस्त 2025'' से शुरू होकर ''8 सितंबर 2025'' को विसर्जित होगा।

मंदिर में श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या

सन् 2008 से पहले, मंदिर में मेले की अवधि के अलावा श्रद्धालुओं की संख्या कम रहती थी। लेकिन जब से विभाग ने मंदिर की सेवा और पूजा का जिम्मा संभाला है, श्रद्धालुओं की संख्या मेला अवधि के अलावा भी बढ़ने लगी है। अब यह मंदिर सिर्फ एक माह के दर्शनार्थ का मंदिर नहीं रहा, बल्कि यह एक बारहमासी मंदिर बन चुका है। इस बदलाव के कारण मंदिर के आय में भी वृद्धि हुई है।

सांप्रदायिक सौहार्द्र का प्रतीक

यह मंदिर एक बहुत अच्छा उदाहरण है कि कैसे धार्मिक स्थलों पर सांप्रदायिक सौहार्द्र और एकता को बढ़ावा दिया जा सकता है। यहाँ विभिन्न समुदायों के लोग आकर पूजा अर्चना करते हैं, और यह मंदिर सभी धर्मों और संस्कृतियों का सम्मान करता है, जिससे यह एक ऐसा स्थान बन गया है, जो धार्मिक सद्भाव का प्रतीक है। मुस्लिम धर्म के अनुयायी गोगाजी को पीर के रूप में जबकि हिन्दू धर्म के अनुयायी गोगाजी महाराज के रूप पूजते है।

मंदिर के विशेष उत्सव आदि

श्री गोगाजी मंदिर में भाद्रपद मास के मेले के अतिरिक्त, ''नववर्ष पर्व'' के अवसर पर भी ''मिनी मेला'' आयोजित किया जाता है। इस मिनी मेले में लगभग 5 लाख श्रद्धालु श्री गोगाजी के दर्शन के लिए आते हैं। इसके अलावा, राज्य सरकार द्वारा समय–समय पर जारी निर्देशानुसार, दीपावली, होली, राम नवमी जैसे प्रमुख उत्सवों पर मंदिर में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन अवसरों पर मंदिर में विशेष रोशनी, सजावट, प्रसाद, और विशेष आरती का आयोजन किया जाता है, जो श्रद्धालुओं को विशेष धार्मिक अनुभव प्रदान करते हैं।

यहां कैसे पहुंचे

1. सड़क मार्ग – गोगामेडी विभिन्न राज्यों जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड, गुजरात, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश आदि से राजमार्गों के माध्यम से जुड़ा हुआ है। यहाँ आसानी से पहुंचने के लिए बस या निजी वाहन का इस्तेमाल किया जा सकता है।

2. रेल मार्ग – गोगामेडी और उसके निकटतम ''हनुमानगढ़'' जिला मुख्यालय रेल मार्ग से जुड़े हुए हैं। हनुमानगढ़ रेलवे स्टेशन से गोगामेडी तक पहुंचने के लिए यात्री ट्रेनों का उपयोग कर सकते हैं।

3. हवाई मार्ग – गोगामेडी का निकटतम ''इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा'' (नई दिल्ली) है, जो गोगामेडी से लगभग 258 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। हवाई यात्रा के बाद, श्रद्धालु सड़क मार्ग द्वारा गोगामेडी तक पहुंच सकते हैं।

गोगामेडी में श्रद्धालुओं के रुकने/विश्राम करने के स्थान

गोगामेडी में विभिन्न समाजों द्वारा संचालित धर्मशालाएँ उपलब्ध हैं, जहाँ श्रद्धालु रुक कर विश्राम कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, आसपास के क्षेत्र में निजी होटल्स भी हैं, जो श्रद्धालुओं को रुकने और विश्राम करने की सुविधाएं प्रदान करते हैं।

गोगामेडी के आस–पास के अन्य दर्शनीय स्थल

1. गोगाणा गांव – गोगामेडी से लगभग 1.5 से 2 किलोमीटर की दूरी पर गांव गोगाणा स्थित है, जहाँ ''गुरू गोरखनाथ जी'' का धुणा है। मान्यता है कि गोगामेडी में आने वाले श्रद्धालु सबसे पहले श्री गोरखनाथ जी के यहां मन्नत और दर्शन करने जाते हैं, इसके बाद वे गोगामेडी में श्री गोगाजी के दर्शन करते हैं।

2. ददरेवा गांव (जिला चुरू) – गोगामेडी से लगभग 92 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ददरेवा गांव में श्री गोगाजी का जन्म स्थल है। यह भी एक प्रमुख धार्मिक स्थल है, जहाँ श्रद्धालु जाकर श्री गोगाजी के जन्म स्थान पर पूजा अर्चना करते हैं।

भविष्य की संभावनाए और विजन

बजट घोषणा वर्ष 2025–26 में श्री गोगाजी मंदिर गोगामेड़ी में श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था एवं सुविधा के दृष्टिगत बेरिकेडिंग व शैड निर्माण सहित विभिन्न कार्य करवाया जाना प्रस्तावित है। श्री गोगाजी के दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धालुओं के सुविधापूर्वक दर्शन व्यवस्था हेतु स्थान बेरिकेडिंग मय शैड, शौचालय, विद्युत, पेयजल आदि की व्यवस्थायें, अस्थाई दुकानों के फाउंडेशन के कार्य, आपातकालीन सड़क निर्माण, विश्राम स्थल निर्माण, सोलर प्लांट लगवाना पार्किंग स्थल विकसित करना, मंदिर की मरम्मत आदि कार्य प्रस्तावित है। इन विकास कार्यो से दर्शनार्थ आये हुए श्रद्धालुओ को सुखद अनुभव होगा तथा इस क्षेत्र के धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होने का मार्ग प्रशस्त होगा।

————————

(अध्याय संख्या – 5)

''एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति'' – शीशम का वृक्ष

(वानस्पतिक नाम – *Dalbergia sissoo*)

शीशम का वृक्ष, जिसे 'इंडियन रोजवुड' भी कहा जाता है। शीशम का वानस्पतिक नाम डालबर्जिया सिस्सू है। यह एक बहुउपयोगी वृक्ष है। यह वृक्ष मुख्य रूप से उपमहाद्वीप के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है। शीशम वृक्ष अपनी कठोरता, सौंद्रर्य, व्यापारिक एवं औषधिय गुणों के कारण पहचाना जाता है। शीशम का वृक्ष मध्यम से बड़ा होता है और इसकी ऊंचाई 30 मीटर तक भी जा सकती है। इसके पत्ते चमकदार हरे और अंडाकार होते हैं। इसकी लकड़ी गहरे भूरे रंग की, मजबूत और टिकाऊ होती है। जिले की जलवायु शीशम वृक्ष के लिए उपयुक्त है, इसलिए जिले में शीशम बहुतायत में लगाया जाता है। इसलिए शीशम वृक्ष को राज्य सरकार द्वारा ''पंच–गौरव कार्यक्रम'' में हनुमानगढ़ के ''एक जिला–एक वानस्पतिक प्रजाति'' के रूप में चयनित किया गया है।

परिचय

शीशम, जिसे स्थानीय भाषाओं में टाली कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण और बहुउपयोगी वृक्ष है, जो विशेष रूप से भारतीय उपमहाद्वीप में पाया जाता है। अंग्रेजी में इसे 'Indian Rosewood' के नाम से जाना जाता है। यह एक पर्णपाती वृक्ष है जो आकार में मध्यम से बड़ा होता है। शीशम की ऊँचाई आमतौर पर 30 मीटर तक पहुंच सकती है तथा मोटाई 50 सेमी. व्यास हो सकती है। यह वृक्ष विशेष रूप से अपने तेजी से बढ़ने और कम उम्र में मजबूत जड़ें विकसित करने के लिए जाना जाता है।

शीशम को अक्सर अपनी फलीदार संरचना के कारण वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करने वाले पौधे के रूप में माना जाता है, जो इसे विशेष रूप से किसानों और ग्रामीण क्षेत्रों में एक उपयोगी वृक्ष बनाता है। इसकी बीजों की संख्या एक किलोग्राम में लगभग 50,000 तक होती है और ये बीज 21 दिन के भीतर अंकुरित हो जाते हैं, जिनका अंकुरण दर 40 प्रतिशत तक हो सकता है।

भौतिक गुण

शीशम की लकड़ी का घनत्व लगभग 0.6 से 0.9 ग्राम प्रति घन सेंटीमीटर होती है, जो इसे मध्यम कठोर बनाती है। इसका प्रमुख गुण यह है कि यह सड़न और कीटों से लड़ने में सक्षम होती है, जिससे यह दीर्घायु होती है। शीशम की लकड़ी के रेशे समान होते हैं, जो आकर्षक आकृतियाँ बनाने में मदद करते हैं। इसकी लकड़ी मजबूत, टिकाऊ और सुंदर होती है, जिससे इसे कई उद्योगों में उपयोग किया जाता है।

शीशम वृक्ष का क्षेत्र विस्तार

भारत में शीशम का प्राकृतिक वितरण हिमालय के तलहटी क्षेत्र, बिहार, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के कुछ हिस्सों में पाया जाता है। राजस्थान के शुष्क और आर्द्र क्षेत्रों में यह वृक्ष विशेष रूप से उपयोगी है। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर ने 30 वर्षों के शोध के बाद शीशम के तीन विशेष क्लोन विकसित किए हैं, जो विशेष रूप से हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर और इंदिरा गांधी नहर के आसपास के क्षेत्रों में लगाए गए हैं। इन क्लोनों की विशेषता यह है कि इनमें सीधा तना और अधिक लकड़ी उत्पादन क्षमता होती है।

शीशम की पारिस्थितिकी

शीशम सामान्यतः नदियों के किनारे उगता है और 200 मीटर से लेकर 1400 मीटर तक की ऊँचाई पर पाया जाता है। यह शुद्ध रेत, बजरी और समृद्ध जलोढ़ मिट्टी में आसानी से उग सकता है। यह लवणीय मिट्टी में भी उगने की क्षमता रखता है। शीशम नदियों के किनारे एक अग्रगामी वृक्ष के रूप में स्थापित होता है, और इसे अक्सर पानी के पास उगाया जाता है, क्योंकि यह पानी की पर्याप्त उपलब्धता वाले क्षेत्रों में सबसे अच्छा उगता है।

शीशम की फीनोलॉजी

शीशम अपने जीवन चक्र से संबंधित विशिष्ट फीनोलॉजी पैटर्न प्रदर्शित करता है। पत्तियाँ आमतौर पर बसंत ऋतु में, पुरानी पत्तियों के गिरने के बाद, मार्च से अप्रैल के आसपास दिखाई देती हैं। फूल आमतौर पर देर से बसंत से गर्मियों की शुरुआत तक, मई से जून तक खिलते हैं। यह वृक्ष छोटे, सुगंधित, सफेद से लेकर हल्के पीले रंग के फूल पैदा करता है। परागण के बाद बीज फली विकसित होती है तथा ग्रीष्म ऋतु के अंत से शरद ऋतु के आरंभ तक, लगभग सितम्बर से अक्टूबर तक परिपक्व होती है।

शीशम का महत्व और उपयोग

1.काष्ठकला और हस्तशिल्प– राजस्थान के बाडमेर और जोधपुर जिले काष्ठकला और हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध हैं। शीशम की लकड़ी का प्रमुख उपयोग इन उद्योगों में किया जाता है। वाद्य यंत्रों, विशेष रूप से मृदंग को भी शीशम की लकड़ी से बनाया जाता है। शीशम लकड़ी से बनी

वस्तुएं विश्वभर में निर्यात की जाती हैं, और इस उद्योग का वार्षिक कारोबार लगभग 1500–2000 करोड़ रुपये है।

2. फर्नीचर उद्योग– शीशम की लकड़ी से बने फर्नीचर और नक्काशीदार वस्तुएं बहुत मूल्यवान होती हैं और इनका निर्यात विश्वभर में किया जाता है। इस लकड़ी का उपयोग उत्कृष्ट गुणवत्ता के फर्नीचर बनाने में किया जाता है जो दीर्घकालिक और मजबूत होता है।

3. पशुचारा– शीशम की पत्तियाँ और नई शाखाएँ अच्छे गुणवत्ता वाले चारे के रूप में उपयोग की जाती हैं। ये पत्तियाँ सभी प्रकार के पालतू मवेशियों के लिए उपयुक्त होती हैं।

4. ईंधन– शीशम की लकड़ी में उच्च ऊष्मीय ऊर्जा होती है, जिससे इसे ईंधन के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। यह अन्य लकड़ियों की तुलना में बेहतर जलने वाली लकड़ी मानी जाती है।

5. औषधीय उपयोग– शीशम के बीजों से निकाला गया तेल त्वचा रोगों के इलाज के लिए उपयोगी होता है। इसके अलावा, शीशम की जड़ और लकड़ी के बुरादे का भी उपयोग त्वचा संबंधी समस्याओं के उपचार में किया जाता है। शीशम के पत्तों में सूजन रोधी गुण होते हैं, जो गठिया और जोड़ों के दर्द में लाभकारी होते हैं। इसके पत्तों के रस का उपयोग घावों को संक्रमण से बचाने के लिए भी किया जाता है।

6. मृदा उर्वरकता– शीशम के वृक्षों की जड़ें मिट्टी में नाइट्रोजन का संचार करती हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है। इसके गिरने वाले पत्ते, फलियां आदि जब विघटित होती हैं, तो यह मृदा को नाइट्रोजन, फास्फोरस और कार्बन से समृद्ध कर देती हैं।

7. कृषि वानिकी– शीशम को अक्सर कृषि वानिकी प्रणालियों में लगाया जाता है क्योंकि यह अन्य फसलों को छाया प्रदान करता है, मृदा को संरक्षित करता है, और हवा को रोकने का काम करता है। यह अन्य फसलों के लिए सूक्ष्म जलवायु में सुधार करने में मदद करता है।

8. पर्यावरण पर्यटन– शीशम के वृक्षों के संरक्षण से पर्यावरणीय पर्यटन को बढ़ावा मिल सकता है। सतत वानिकी और हर्बल वृक्षारोपण से पर्यावरणीय पर्यटन को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है, और किसानों और पर्यटकों को इसके महत्व के बारे में जागरूक किया जा सकता है।

शीशम जीवन चक्र, कीट, रोग व नियंत्रण उपाय–

शीशम एक तेज़ वृद्धि वाला वृक्ष है, और इसे बीज, कटिंग और रूट–शूट से उगाया जा सकता है। इसे पहले दो वर्षों में पर्याप्त पानी और खाद की आवश्यकता होती है। यदि इसे अच्छी देखभाल दी जाती है, तो यह वृक्ष 30 मीटर तक ऊँचाई प्राप्त कर सकता है। शीशम का तना

सीधा और मजबूत होता है और यह वृक्ष 25 वर्षों के बाद परिपक्व होता है। इस समय वृक्ष की लकड़ी से अधिकतम उत्पादन लिया जा सकता है।

शीशम पर कीटों और रोगों का हमला हो सकता है, जैसे दीमक, बोरर और पत्ती गिराने वाले कीट। इसके अलावा, यह जड़ सड़न, पत्ती धब्बा, पाउडरी फफूंदी और कैंकर जैसी बीमारियों से प्रभावित हो सकता है। इन रोगों और कीटों से बचाव के लिए उचित निगरानी और कीटनाशकों का उपयोग करना आवश्यक होता है।

वनमंडल हनुमानगढ़ द्वारा शीशम का पौधारोपण

वनमंडल हनुमानगढ़ ने कोहला क्षेत्र में शीशम के पौधों का बड़े पैमाने पर पौधारोपण किया है। यह वन विभागीय पौधारोपण कार्यक्रम का हिस्सा है, जिसमें शीशम के पेड़ों का उपयोग किया गया है ताकि पर्यावरण और कृषि वानिकी में सुधार किया जा सके।

शीशम का वृक्ष न केवल पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है, बल्कि यह एक बहुउपयोगी वृक्ष है जो विभिन्न उद्योगों, कृषि, पर्यावरण और समाज के लिए लाभकारी है। इसका संरक्षण और संवर्धन जैव विविधता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। शीशम का वृक्ष न केवल हमारी पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र को समृद्ध करता है, बल्कि यह आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

————————

(अध्याय संख्या – 6)

''एक जिला–एक खेल''– हॉकी

हनुमानगढ़ जिले के निकटवर्ती राज्य पंजाब में हॉकी खेल की प्रसिद्धि ने इसे हनुमानगढ़ में भी लोकप्रिय खेल बना दिया है। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा की बजट घोषणा अनुसार पंच–गौरव के तहत हनुमानगढ़ में प्रचलित खेल हॉकी को एक जिला–एक खेल के रूप में चयनित किया गया है।

हनुमानगढ़ में हॉकी का उदय और विकास– विस्तृत परिचय

हनुमानगढ़, जो पहले ''भटनेर'' के नाम से जाना जाता था, में हॉकी का उदय एक ऐतिहासिक घटना रही है। 1973 में एन.आई.एस. कोच श्री परमजीत सिंह गुमान ने नेहरू मैमोरियल महाविद्यालय में डी.पी.ई. (Director of Physical Education) के पदभार को ग्रहण किया। उनका मार्गदर्शन और प्रयास इस क्षेत्र में हॉकी को नई ऊंचाई पर ले गए। श्री गुमान ने स्थानीय छात्रों को प्रशिक्षित किया और हॉकी को क्षेत्र में एक प्रमुख खेल के रूप में स्थापित किया।

हॉकी का शुरुआती विकास (1974)

1974 में जब ''इंटर महाविद्यालय प्रतियोगिता'' का आयोजन हुआ, हनुमानगढ़ की टीम ने कोटा के साथ संयुक्त विजेता बनने का गौरव प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में हनुमानगढ़ की हॉकी टीम की अभूतपूर्व सफलता ने न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि पूरे राज्य में इस खेल की पहचान को मजबूत किया। इसके बाद, हनुमानगढ़ की हॉकी टीम ने पूरे राजस्थान में तहलका मचा दिया। एक छोटे से शहर में जन्मी यह हॉकी टीम अब राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हो चुकी थी।

राजस्थान में हॉकी का बादशाह

हनुमानगढ़ की हॉकी टीम ने 1974 से 1990 तक ''राजस्थान विश्वविद्यालय के अंतर महाविद्यालय हॉकी प्रतियोगिता में 13 बार विजेता बनकर इतिहास रचा। हनुमानगढ़ के हॉकी खिलाड़ी राजस्थान विश्वविद्यालय की टीम का महत्वपूर्ण हिस्सा बने और हर बार प्रतियोगिता के फाइनल में स्थान प्राप्त किया। इस दौरान, हनुमानगढ़ के 10 से 12 खिलाड़ी राजस्थान विश्वविद्यालय की टीम का हिस्सा होते थे, जो दर्शाता है कि हनुमानगढ़ में हॉकी के खेल में कितनी प्रगति हुई थी।

खिलाड़ियों की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सफलता

हनुमानगढ़ के हॉकी खिलाड़ी न केवल राज्य बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना रहे थे–

1. श्री तेजेन्द्रपाल सिंह– हनुमानगढ़ के श्री तेजेन्द्रपाल सिंह ने भारतीय हॉकी टीम में अपनी जगह बनाई और देश का नाम रोशन किया।

2. श्री शैलेन्द्र शर्मा– श्री शैलेन्द्र शर्मा भारतीय विश्वविद्यालय हॉकी टीम के कप्तान बने और अपनी नेतृत्व क्षमता का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

3. श्री हरफूल सिंह, श्री अरविन्द पाल सिंह, श्री दर्शन सिंह संधू, श्री राकेश बेनीवाल– ये खिलाड़ी राजस्थान टीम का हिस्सा बने और आस्ट्रिया और स्पेन जैसी विदेशी हॉकी टीमों के खिलाफ जयपुर और जोधपुर में टेस्ट मैच खेले।

4. स्व. नरेश यादव– हनुमानगढ़ के स्व. नरेश यादव ने भारतीय विश्वविद्यालय हॉकी टीम के सदस्य के रूप में जर्मनी का दौरा किया और देश का मान बढ़ाया।

इन खिलाड़ियों की सफलता ने हनुमानगढ़ को हॉकी के क्षेत्र में एक मजबूत और सम्मानित स्थान दिलाया।

राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन

हनुमानगढ़ की हॉकी की लोकप्रियता को देखते हुए, यहाँ पर चार बार राष्ट्रीय स्तर की हॉकी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में पंजाब पुलिस, भारतीय रेलवे, और भारतीय सेना की टीमें भाग लेती थीं। इन प्रतियोगिताओं में उस समय के प्रसिद्ध भारतीय हॉकी खिलाड़ी हनुमानगढ़ में खेलते थे। इससे न केवल हनुमानगढ़ बल्कि पूरे क्षेत्र के लोगों में हॉकी के प्रति एक नई जागरूकता और रुचि बढ़ी।

श्री परमजीत सिंह गुमान का योगदान

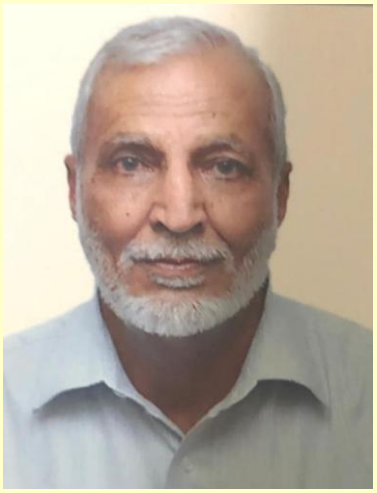

श्री परमजीत सिंह गुमान ने हनुमानगढ़ के हॉकी खेल में अभूतपूर्व योगदान दिया। उनके मार्गदर्शन और कड़ी मेहनत के कारण हनुमानगढ़ की हॉकी टीम ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सफलता हासिल की। उनके योगदान को देखते हुए, राजस्थान विश्वविद्यालय ने उन्हें जयपुर में स्पोर्ट्स बोर्ड का चेयरमैन नियुक्त किया। इसके साथ ही, उन्होंने भारतीय विश्वविद्यालय हॉकी टीम के चीफ कोच के रूप में भी कार्य किया। उनके नाम पर आज राजस्थान विश्वविद्यालय में हॉकी खेल मैदान बना हुआ है, जो उनकी महान उपलब्धियों का प्रतीक है।

1974 हनुमानगढ़ की विजेता हॉकी टीम ओलंपियन मुख्य अतिथि श्री प्रथ्वी पाल सिंह के साथ

खिलाड़ियों को नौकरी के अवसर

हनुमानगढ़ के हॉकी खिलाड़ी न केवल खेल के मैदान में अपनी पहचान बना रहे थे, बल्कि उन्होंने विभिन्न सरकारी विभागों में खेल कोटे से भी नौकरी प्राप्त की। इनमें से कई खिलाड़ी भारतीय रेलवे, पंजाब पुलिस, कस्टम विभाग, और शिक्षा विभाग से जुड़ गए और राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व किया। यह सफलता उन खिलाड़ियों के लिए एक नया अवसर और सम्मान लेकर आई, साथ ही पूरे क्षेत्र में हॉकी को एक प्रोत्साहन मिला।

हॉकी से संबंधित जिले में सुविधाएं

जिला खेलकूद प्रशिक्षण केन्द्र, हनुमानगढ़ में हॉकी हेतु खेल मैदान निर्मित है तथा एक अल्पकालीन प्रशिक्षक भी नियुक्त है। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में भी हॉकी के प्रति खिलाड़ियों का रूझान अधिक है। इस हेतु लगभग 20 गांवो में भी हॉकी खेल मैदान बने हुए है जिसमें प्रतिदिन बालक/बालिकाएं अभ्यास करते हैं। हनुमानगढ़ जिले की हॉकी की बालक/बालिका टीम प्रतिवर्ष राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में विजेता रहती आ रही है तथा प्रतिवर्ष जिले के लगभग 15 खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं।

जिले में हॉकी खेल की संभावनाएं

हनुमानगढ़ जिले में हॉकी खेल की संभावनाएं अत्यधिक सकारात्मक हैं। जिले की ऐतिहासिक हॉकी परंपरा, यहाँ के खिलाड़ियों की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धियों और स्थानीय खेल संस्कृति को देखते हुए, जिले में हॉकी के खेल को और बढ़ावा दिया जा सकता है। जिले में हॉकी खेल की संभावनाओं के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है–

1 . इतिहास और सफलता की परंपरा– हनुमानगढ़ में हॉकी का इतिहास काफी समृद्ध रहा है। 1973 में श्री परमजीत सिंह गुमान द्वारा नेहरू महाविद्यालय में हॉकी को प्रोत्साहित करने के बाद से जिले ने लगातार कई सालों तक अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त की। जिले के हॉकी खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने प्रदर्शन से प्रदेश और देश का नाम रोशन किया है। जिले में हॉकी का इतिहास और प्रतिष्ठा इसे एक मजबूत आधार बनाता है, जिससे भविष्य में और अधिक खिलाड़ी उभर सकते हैं।

2. कोचिंग और प्रशिक्षण की सुविधाएं– हनुमानगढ़ में पहले से ही एक उच्च गुणवत्ता की कोचिंग प्रणाली है, जो खिलाड़ियों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार करती है। यदि इस कोचिंग प्रणाली को और मजबूत किया जाए और वर्तमान में उपलब्ध संसाधनों का उचित उपयोग किया जाए, तो और अधिक खिलाड़ी सामने आ सकते हैं। इसके साथ ही, अन्य प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित कर नए प्रशिक्षकों की एक टीम बनाई जा सकती है।

3. खिलाड़ियों की संख्या में वृद्धि– हनुमानगढ़ में पहले ही हॉकी की एक मजबूत टीम रही है, जिसमें कई खिलाड़ी राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर चुके हैं। यह संभावनाएं उत्पन्न करती हैं कि जिले में और अधिक युवा खिलाड़ी इस खेल में अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं। खेल को बढ़ावा देने के लिए स्कूलों और कॉलेजों में हॉकी को प्राथमिकता दी जा सकती है, जिससे नए खिलाड़ियों की पहचान की जा सके। इसके लिए जिले के विभिन्न खेल संस्थानों और महाविद्यालयों के साथ मिलकर हॉकी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

4. खेल सुविधाओं का सुधार और विस्तार– हनुमानगढ़ में हॉकी के खेल को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है कि जिले में खेल के लिए बेहतर सुविधाएं प्रदान की जाएं। विशेष रूप से, हॉकी के लिए उच्च गुणवत्ता वाले खेल मैदान, सिंथेटिक टर्फ, प्रशिक्षण कक्ष, और अन्य आधारभूत सुविधाओं की आवश्यकता है। जिन्हें पंच गौरव कार्यक्रम के माध्यम विकसित कर सुविधाओं का विस्तार किया जायेगा।

5. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन– हनुमानगढ़ में पहले ही राष्ट्रीय स्तर की हॉकी प्रतियोगिताओं का आयोजन हो चुका है, जिसमें प्रसिद्ध टीमें और खिलाड़ी शामिल हुए थे। यदि जिले में नियमित रूप से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए, तो यह न केवल खिलाड़ियों के लिए एक बड़ा मंच प्रदान करेगा, बल्कि जिले में हॉकी की लोकप्रियता को भी बढ़ावा देगा। इससे जिले के युवा खिलाड़ियों को अपनी क्षमताओं को दिखाने का अवसर मिलेगा और हॉकी को एक प्रोत्साहन मिलेगा।

6. सामाजिक समर्थन और प्रोत्साहन– हनुमानगढ़ में हॉकी की सफलता को देखते हुए यह जरूरी है कि स्थानीय समुदाय और संगठनों का समर्थन प्राप्त हो। विभिन्न समुदायों और संस्थाओं के साथ मिलकर हॉकी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहल की जा सकती है।

स्कूलों और कॉलेजों में हॉकी के प्रति जागरूकता बढ़ाना, स्थानीय स्तर पर टूर्नामेंट आयोजित करना और समर्पित खेल समितियों के गठन से हॉकी के खेल को एक सामूहिक प्रयास के रूप में प्रचारित किया जा सकता है।

7. राज्य सरकार और खेल विभाग का सहयोग– राज्य सरकार और खेल विभाग का सहयोग जिले में हॉकी खेल के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। राज्य सरकार द्वारा हॉकी को प्राथमिकता देने और उसके विकास के लिए बजट आवंटन से खेल की सुविधाओं और संसाधनों में सुधार होगा। इसके अलावा, राज्य सरकार की विभिन्न खेल योजनाओं का लाभ जिले के खिलाड़ियों को मिलेगा, जिससे उनकी प्रतिभा और कौशल को और निखारा जा सकेगा।

8. इन्फ्रास्ट्रक्चर और तकनीकी विकास– जिले में हॉकी की प्रौद्योगिकी और उपकरणों में सुधार भी जरूरी है। नई तकनीकी पहलें, जैसे बेहतर प्रशिक्षण उपकरण, वीडियो विश्लेषण तकनीक, फिटनेस सत्र, और अन्य आधुनिक उपकरण खिलाड़ियों को प्रशिक्षण में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, खेल विज्ञान के क्षेत्रों में भी विकास किया जा सकता है, ताकि खिलाड़ियों को उच्च स्तर की प्रतिस्पर्धा में शामिल होने के लिए बेहतर तैयारी मिल सके।

9. प्रोफेशनल हॉकी क्लब्स और अकादमियों की स्थापना– हनुमानगढ़ में हॉकी के विकास के लिए एक पेशेवर हॉकी अकादमी की स्थापना की जा सकती है। यह अकादमी जिले के युवाओं को हॉकी की पेशेवर प्रशिक्षण दे सकती है और एक निर्धारित पाठ्यक्रम के माध्यम से उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के योग्य बना सकती है। इसके साथ ही, एक पेशेवर हॉकी क्लब भी स्थापित किया जा सकता है, जो जिले के खिलाड़ियों को एक स्थिर मंच प्रदान करेगा।

हनुमानगढ़ की सीनियर हॉकी टीम जिला कलेक्टर श्री काना राम जी के साथ

तत्कालीन विधायक श्री श्योपत सिंह हनुमानगढ़ हॉकी टीम के कप्तान दर्शन सिंह को विजेता शील्ड देते हुए

हॉकी का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

हनुमानगढ़ में हॉकी ने न केवल खेल के क्षेत्र में बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी सकारात्मक बदलाव लाए। इस खेल ने युवा पीढ़ी को प्रेरित किया, जिससे उन्होंने खेल में अपनी रुचि विकसित की और स्वस्थ जीवनशैली को अपनाया। हॉकी की सफलता ने क्षेत्रीय गर्व को बढ़ाया और हनुमानगढ़ को एक नए परिप्रेक्ष्य में देखा जाने लगा। इस खेल के माध्यम से कई युवा खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफल रहे।

हनुमानगढ़ में हॉकी खेल की समृद्ध परंपरा और सफलता ने इसे ''एक जिला–एक खेल'' योजना के तहत चुने जाने के लिए एक आदर्श बनाकर प्रस्तुत किया है। जिले में उत्कृष्ट कोचिंग, खेल सुविधाओं और युवा खिलाड़ियों के उत्साह के साथ हॉकी का भविष्य अत्यधिक उज्जवल दिखता है। यदि जिले में और अधिक सुविधाओं और कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए, तो यह खेल ना केवल हनुमानगढ़ बल्कि समूचे राज्य और देश में अपनी पहचान और प्रतिष्ठा को और बढ़ा सकता है। हॉकी के विकास के साथ हनुमानगढ़ न केवल खेल जगत में बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी एक महत्वपूर्ण स्थल बन सकता है।

हनुमानगढ़ जिले के हॉकी खिलाड़ी

क्र.सं.	नाम	स्तर	कार्य विशेष	मोबाईल नं.
1	तेजेन्द्रपाल सिंह	अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी	कस्टम अधिकारी	9602616774
2	हरफुल सिंह	राष्ट्रीय खिलाड़ी	चीफ हॉकी कोच, एनआईएस, पटियाला	8901081661
3	दर्शन सिंह संधू	राष्ट्रीय खिलाड़ी	ट्रेन मैनेजर, भारतीय रेलवे	7073366509
4	अरविंद पाल सिंह	राष्ट्रीय खिलाड़ी	व्यवसायी	9602616774
5	इकबाल सिंह ढिल्लो	राष्ट्रीय खिलाड़ी	एनआईएस कोच	7742555812
6	स्व. नरेश यादव	अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी	एफसीआई	
7	शेलेन्द्र शर्मा	राष्ट्रीय खिलाड़ी	खेलकूद निरीक्षक, भारतीय रेलवे	9828137074
8	नरेन्द्र पाल सिंह	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	पुलिस अधीक्षक, पंजाब पुलिस	9417233290
9	मस्तान सिंह	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	शा.शि.	9782839533
10	नसीब सिंह	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	शा.शि.	9530201265
11	भागीरथ	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	टी.टी.ई., भारतीय रेलवे	9414954813
12	निर्मल सिंह	राज्य स्तरीय खिलाड़ी	चीफ मैनेजर, स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया	9413396452
13	राकेश बेनीवाल	राष्ट्रीय खिलाड़ी	व्यवसायी	9414500921
14	भूपेन्द्र सिंह	राष्ट्रीय खिलाड़ी	पी.एन.टी.	8302874704
15	गुरदीप सिंह	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	शा.शि.	9460487787
16	गुरदीप सिंह (सीनीयर)	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	आयुक्त, नगर परिषद	7737285800
17	जे.डी. पठान	राष्ट्रीय खिलाड़ी	पी.एन.टी.	9413931001
18	जयदर्थ भाटी	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	व्यवसायी	9414903802
19	महावीर सिंह	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	शिक्षा विभाग	9928819988
20	परमजीत सिंह	राष्ट्रीय खिलाड़ी	एल.एन.सी.पी., ग्वालियर	
21	राजेन्द्र सिंह	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	ट्रेन मैनेजर, भारतीय रेलवे	9414500921
22	संजय कुमार	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	शा.शि.	9509426662
23	हरजिन्द्र सिंह	राष्ट्रीय खिलाड़ी	ए.जी.	9414248740
24	शक्ति सिंह	विश्वविद्यालय खिलाड़ी		
25	सुनिल बिहाणी	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	व्यवसायी	9828253001
26	सुनिल कुमार	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	राज्य कर्मचारी	9829720138
27	राजपाल ढाका	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	शा.शि.	8949047661

28	मन्जोत सिंह	राष्ट्रीय खिलाड़ी	अधिवक्ता	9783000873
29	विशाल शर्मा	राष्ट्रीय खिलाड़ी	वरिष्ठ अध्यापक	9461061526
30	सुखदेव सिंह	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	व्यवसायी	9807520003
31	गौरव भारद्वाज	राष्ट्रीय खिलाड़ी	व्यवसायी	8209878266
32	दिग्विजय सिंह	राष्ट्रीय खिलाड़ी	शा.शि.	9509206162
33	अमरजीत गोदारा	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	राज्य कर्मचारी	9414508494
34	अश्फाक खान	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	रेलवे	9460687786
35	गुरमेल सिंह	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	रेलवे	9414564405
36	मान सिंह	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	रेलवे	9001760220
37	मनीष कुमार शर्मा	विश्वविद्यालय खिलाड़ी	अधिवक्ता	9414095907
38	विपुल गर्ग	जूनियर नेशनल ऑल इण्डिया	सेना	
39	करणजोत सिंह	सीनीयर नेशनल खेलो इण्डिया	ए.जी.	
40	हरवीर सिंह	सीनीयर नेशनल इण्टर यूनिवर्सिटी (एन. आई.एस.)	विद्यार्थी	
41	मुकेश शर्मा	सीनीयर नेशनल	शा.शि.	
42	सीता राम	सीनीयर नेशनल	शा.शि.	
43	राजपाल सिंह	सीनीयर नेशनल	विद्यार्थी	
44	हिमांशु शर्मा	जूनियर नेशनल	विद्यार्थी	
45	गुलाब भदरा	सीनीयर नेशनल	विद्यार्थी	
46	सुखप्रीत कौर	जूनियर/सीनीयर स्कूल	विद्यार्थी	
47	अशमीत सिंह	जूनियर स्कूल	विद्यार्थी	
48	सतवीर कौर	सीनीयर नेशनल स्कूल	विद्यार्थी	
49	नेहा	जूनियर नेशनल स्कूल	विद्यार्थी	
50	कल्पना	जूनियर नेशनल स्कूल	विद्यार्थी	
51	कमलप्रीत	सीनीयर/जूनियर स्कूल	विद्यार्थी	
52	दानिश	जूनियर नेशनल स्कूल	विद्यार्थी	
53	जावेद	जूनियर नेशनल	विद्यार्थी	
54	पंकज गोदारा	जूनियर नेशनल	कृषि विभाग	
55	राहूल गोदारा	जूनियर नेशनल	विद्यार्थी	
56	निशान्त कौशिक	सब जूनियर नेशनल	विद्यार्थी	
57	निधि	सीनीयर नेशनल	शा.शि.	

आपणो अग्रणी राजस्थान

जिला प्रशासन, हनुमानगढ़